PRGI : APHIN/26/A3657

पेन पॉवर

हिंदी दैनिक समाचार पत्र

वर्ष - 1 अंक - 27 गुरूवार, अगस्त 6, 2026 *विशाखापट्टनम* संपादकः गंट्यादा अप्पाराव पृष्ठों. 4 मूल्य. 1रु

विशाखापत्तनम आर्थिक क्षेत्र परियोजना पर मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू का विशेष फोकस

(पेन पॉवर न्यूज):
अमरावती, 5 अगस्तः आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने बुधवार को राज्य सचिवालय में विशाखापत्तनम आर्थिक क्षेत्र की विकास योजनाओं की समीक्षा की। बैठक के दौरान उन्होंने अधिकारियों को परियोजना के क्रियान्वयन से जुड़े कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि विशाखापत्तनम आर्थिक क्षेत्र परियोजना का लक्ष्य विभिन्न क्षेत्रों में ध्9.50 लाख करोड़ का निवेश आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि सरकार ध्3.50 लाख करोड़ से ध्4 लाख करोड़ तक का निवेश करेगी, जबकि निजी क्षेत्र से लगभग ध्5.30 लाख करोड़ का निवेश लाने की कार्ययोजना तैयार की जा रही है।

क्षेत्र के समग्र विकास पर जोर

चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि सरकार बे सिटी परियोजना को एंकर प्रोजेक्ट बनाकर विशाखापत्तनम आर्थिक क्षेत्र का विकास करना चाहती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि टम्त परियोजना का उद्देश्य सूक्ष्म स्तर की योजना के माध्यम से पूरे क्षेत्र का समग्र विकास करना है।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि टम्त के अंतर्गत आने वाले प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक सेक्टर को ध्यान में रखते हुए विकास योजनाएं तैयार की जाएं। मुख्यमंत्री ने एआई डेटा सेंटर इकोसिस्टम, बंदरगाह आधारित उद्योग, पर्यटन, हाइड्रोजन तथा क्लीन–टेक ऊर्जा क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने को कहा।

उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि मूलापेट बंदरगाह से लेकर राजमहेंद्रवरम अखंड गोदावरी परियोजना तक के विकास को टम्त का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि विभिन्न विकास परियोजनाओं के समन्वय से विशाखापत्तनम आर्थिक क्षेत्र को गति दी जानी चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को फंड कन्वर्जेंस के माध्यम से विकास कार्यों को आगे बढ़ाने और आवश्यकता अनुसार वायबिलिटी गैप फंडिंग योजना लागू करने के निर्देश दिए।

इस समीक्षा बैठक में मुख्य सचिव के. साई प्रसाद तथा वित्त, उद्योग, नगर प्रशासन, वन, ऊर्जा और पर्यटन विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

जगन के मामलों में 13 साल की देरी का मुद्दा राज्यसभा में टीडीपी सांसद चिंतकायाला विजय ने उठाया

नई दिल्ली, 5 अगस्तः सुप्रीम कोर्ट न्यायाधीश (संशोधन) विध ेयक, 2026 पर राज्यसभा में चर्चा के दौरान तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के सांसद चिंतकायाला विजय ने अपनी पार्टी की ओर से विधेयक का पूर्ण समर्थन किया। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों की संख्या 33 से बढ़ाकर 37 करने के निर्णय को समयोचित और सराहनीय बताया। विजय ने त्वरित न्याय सुनिश्चित करने के लिए ई–कोर्ट और फास्ट ट्रैक कोर्ट स्थापित करने पर प्रध ानमंत्री नरेंद्र मोदी की सराहना की। साथ ही अमरावती में न्यायिक अवसंरचना के विकास के लिए आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू की दूरदृष्टि की भी प्रशंसा की।

जगन के मामलों की सुनवाई आगे नहीं बढ़ी

सांसद चिंतकायाला विजय ने कहा कि कानून के सामने आम नागरिक और प्रभावशाली व्यक्ति सभी समान हैं तथा न्याय में देरी का अर्थ न्याय से वंचित करना है। इसी संदर्भ में उन्होंने राज्यसभा में आंध्र प्रदेश के पूर्व

मुख्यमंत्री और वाईएसआर कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) के अध्यक्ष वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी के कथित आय से अधिक संपत्ति मामलों का उल्लेख किया।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2013 में दर्ज सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के मामले 13 वर्ष बीत जाने के बावजूद भी आगे नहीं बढ़ सके हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि डिस्चार्ज याचिकाओं और न्यायाधीशों के तबादलों का सहारा लेकर जानबूझकर सुनवाई में देरी की जा रही है। विजय ने मांग की कि चाहे व्यक्ति कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो, उसके मामलों की समयबद्ध सुनवाई होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की लंबी देरी से न्यायपालिका पर जनता का विश्वास कमजोर होता है।

पारदर्शी और त्वरित न्याय मिलना चाहिए

सांसद चिंतकायाला विजय ने कहा कि भारत की जनसंख्या लगभग 150 करोड़ तक पहुंचने के वर्तमान समय में प्रत्येक नागरिक को त्वरित और पारदर्शी न्याय मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि न्यायपालिका पर लोगों का विश्वास मजबूत करने के लिए केवल सर्वोच्च न्यायालय ही नहीं, बल्कि उच्च न्यायालयों, अधीनस्थ न्यायालयों और विशेष रूप से विशेष सीबीआई अदालतों को भी समानांतर रूप से सशक्त बनाया जाना चाहिए, ताकि मामलों का शीघ्र निपटारा सुनिश्चित हो सके।

गुंडागर्दी दिखाना वाईएसआरसीपी की राजनीतिक संस्कृति बन गई हैः मंत्री वासमसेट्टी सुभाष

(पेन पॉवर न्यूज):
अमरावती, 5 अगस्तः आंध्र प्रदेश के मंत्री वासमसेट्टी सुभाष ने वाईएसआर कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) के अध्यक्ष वाई. एस. जगन मोहन रेड्डी पर तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि जगन के दौरे के दौरान वाईएसआरसीपी कार्यकर्ताओं ने बसों को रोका, वाहनों के साइलेंसर हटाकर शक्ति प्रदर्शन किया और आम जनता को परेशानी में डाला।

उन्होंने कहा कि गुंडागर्दी का प्रदर्शन करना अब वाईएसआरसीपी की राजनीतिक संस्कृति बन गया है। बुधवार को अमरावती में मीडिया से बातचीत करते हुए मंत्री ने कहा कि तंबाकू किसानों की समस्याओं पर बोलने का नैतिक अधिकार जगन के पास नहीं है। मंत्री वासमसेट्टी सुभाष ने कहा कि वाईएसआरसीपी सरकार के कार्यकाल में केवल 12.9 मिलियन किलोग्राम एचडी बर्ली तंबाकू की खरीद हुई थी। इसके विपरीत, वर्तमान सरकार ने 28.9 मिलियन किलोग्राम तंबाकू खरीदकर किसानों को मजबूत समर्थन दिया है। उन्होंने बताया कि इस खरीद से किसानों को लगभग 270 करोड़ का आर्थिक लाभ मिला। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतों में गिरावट और वैश्विक युद्ध जैसी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद सरकार किसानों के साथ मजबूती से खड़ी है।

आंध्र प्रदेश के युवा वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था का हिस्सा बनें: नारा लोकेश

(पेन पॉवर न्यूज):
विशाखापत्तनम, 5 अगस्तः आंध्र प्रदेश के मंत्री नारा लोकेश ने राज्य के युवाओं से वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया। वह विशाखापत्तनम में आईबीएम कंसल्टिंग फ्यूचर नाउ सेंटर के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह नया केंद्र विशाखापत्तनम को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), डिजिटल सेवाओं और प्रौद्योगिकी आधारित नवाचार का वैश्विक केंद्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मंत्री ने कहा कि गठबंधन सरकार का लक्ष्य ऐसा समग्र तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है, जो तकनीकी निवेश आकर्षित करे, गुणवत्तापूर्ण रोजगार सृजित करे, भविष्य के लिए तैयार प्रतिभाओं का विकास करे और आंध्र प्रदेश के युवाओं को वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बनाए। उन्होंने आंध्र प्रदेश के प्रति आईबीएम की निरंतर प्रतिबद्धता का स्वागत करते हुए कहा कि सरकार कंपनी के साथ मिलकर विशाखापत्तनम को भारत के अग्रणी एआई और डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन केंद्रों में विकसित करने के लिए उत्सुक है।

आईबीएम फ्यूचर नाउ सेंटर वैश्विक एआई और डिजिटल परिवर्तन को देगा गति

आईबीएम कंसल्टिंग फ्यूचर नाउ सेंटर की स्थापना कंपनी की वैश्विक कंसल्टिंग सेवाओं और AI&First Transformation परियोजनाओं को समर्थन देने के लिए की गई है। यह केंद्र भारत में तकनीकी नवाचार और कुशल मानव संसाधन विकास में आईबीएम के निरंतर निवेश का एक महत्वपूर्ण कदम है। यह केंद्र दुनिया भर के ग्राहकों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), हाइब्रिड क्लाउड, सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग, डेटा एवं एनालिटिक्स, साइबर सुरक्षा और एंटरप्राइज ट्रांसफॉर्मेशन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में परामर्श और तकनीकी सेवाएं प्रदान करेगा। इसके अलावा, यह एआई आधारित क्लाउड ट्रांसफॉर्मेशन, प्लेटफॉर्म इंजीनियरिंग, सर्विस इंटीग्रेशन, क्वालिटी इंजीनियरिंग और यूजर एक्सपीरियंस सेवाओं का प्रमुख केंद्र भी होगा, जिससे विशाखापत्तनम की पहचान एक प्रमुख तकनीकी और नवाचार केंद्र के रूप में और मजबूत होगी।

देश में कहीं भी पिछड़े वर्गों के लिए अलग कानून नहीं हैः मंत्री किंजारापु अच्चेनायडु

(पेन पॉवर न्यूज):
अमरावती, 5 अगस्तः आंध्र प्रदेश के मंत्री किंजारापु अच्चेनायडु ने कहा कि पिछड़े वर्गों (बीसी) के लिए देश में कहीं भी कोई अलग कानून नहीं है। बुधवार को मीडिया से बातचीत के दौरान उन्होंने प्रस्तावित बीसी संरक्षण कानून से संबंधित जानकारी साझा की।

मंत्री ने कहा कि सरकार पिछले दो वर्षों से इस नए कानून को तैयार करने के लिए व्यापक स्तर पर काम कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि 2019–2024 के दौरान कमजोर वर्गों को निशाना बनाकर उनके साथ दमनात्मक व्यवहार किया गया। उन्होंने कहा कि गठबंधन सरकार ने अपने चुनावी घोषणा–पत्र में कमजोर वर्गों के लिए विशेष कानून लाने का वादा किया था और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए एक उप–समिति

(सब–कमेटी) का भी गठन किया गया।

अच्चेनायडु ने कहा कि समाज के कमजोर वर्गों की समस्याओं पर विस्तृत चर्चा की गई है।

व्यापक परामर्श के बाद तैयार होगा विधेयक

मंत्री ने कहा कि एन.टी. रामाराव (एनटीआर) ने पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण लागू किया था, जबकि मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने इसे बढ़ाकर 27 प्रतिशत कर दिया। उन्होंने कहा कि आंध्र प्रदेश में लगभग 70 प्रतिशत आबादी कमजोर वर्गों से संबंधित है। सरकार केवल विधायकों की राय ही नहीं, बल्कि सभी संबंधित पक्षों की सहमति और सुझाव भी लेना चाहती है। अच्चेनायडु ने बताया कि राज्य विधानसभा में मसौदा विधेयक पेश करने से पहले राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (छब्ठब) से भी परामर्श लिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित कानून को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि उप–समिति को निर्देश दिया गया है कि वह प्रत्येक जिले में कमजोर वर्गों के संगठनों से बातचीत करे, प्रस्तावित कानून की जानकारी जनता तक पहुंचाए और उनके सुझाव एकत्र करे। मंत्री ने कहा कि तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) हमेशा से समाज के कमजोर वर्गों के साथ खड़ी रही है।

'मनमाने बयान देना उचित नहीं': भानु प्रकाश रेड्डी ने प्रकाश राज पर साधा निशाना

(पेन पॉवर न्यूज):
अमरावती, 5 अगस्तः भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने आंध्र प्रदेश साइबर क्राइम महानिदेशक रवि शंकर को हिंदू देवी–देवताओं से संबंधित सोशल मीडिया पोस्ट और अभिनेता प्रकाश राज की कथित टिप्पणियों के खिलाफ शिकायत सौंपी।

यह शिकायत 57 व्यक्तियों के विवरण के साथ भाजपा नेताओं भानु प्रकाश रेड्डी, वल्लूरु जयप्रकाश, शेख बाजी और श्रीनिवास रेड्डी ने दर्ज कराई। इस अवसर पर तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) बोर्ड सदस्य भानु प्रकाश रेड्डी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में भगवान श्रीराम को आराध्य देव माना जाता है, जबकि माता सरस्वती, माता लक्ष्मी और माता सीता को मां के समान सम्मान दिया जाता है।

कड़ी कार्रवाई की मांग

भानु प्रकाश रेड्डी ने आरोप लगाया कि हिंदू देवी–देवताओं के बारे में आपत्तिजनक टिप्पणियां की जा रही हैं और कहा कि ऐसे वीडियो देखना भी कठिन है। उन्होंने कहा कि हिंदू देवी–देवताओं के बारे में मनमाने और अपमानजनक बयान देना स्वीकार्य नहीं है।

उन्होंने कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि ऐसे मामलों को किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भानु प्रकाश रेड्डी ने आरोप लगाया कि प्रकाश राज ने भगवान श्रीराम के बारे में आपत्तिजनक टिप्पणियां की हैं और कहा है कि श्रीराम उत्तर भारत से दक्षिण भारत आए और फल चुराए।

उन्होंने प्रकाश राज को चुनौती दी कि यदि उनमें साहस है तो वे अन्य धर्मों के अनुयायियों के साथ होने वाले कथित अन्याय

पर भी बोलें। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रकाश राज केवल हिंदू धर्म और हिंदू देवी–देवताओं को ही निशाना बनाते हैं तथा ऐसे लोगों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की मांग की।

संपादकीय

नीलेकणी के ऊपर परीक्षा प्रणाली में सुधार का जिम्मा

इंफोसिस के सह संस्थापक और भारत में आधार क्रांति के सूत्रधार नंदन नीलेकणी के ऊपर केंद्र सरकार ने परीक्षा प्रणाली में सुधार के सुझाव देने का जिम्मा सौंपा है। भारत की अंतरिक्ष एजेंसी इसरो के पूर्व प्रमुख एस सोमनाथ को भी इस उच्चाधिकार प्राप्त कमेटी का सदस्य बनाया गया है। पता नहीं लोगों को याद हो कि न हो, दो साल पहले इसरो के पूर्व प्रमुख के राधाकृष्णन की अध्यक्षता में परीक्षा प्रणाली में सुधार के सुझाव देने के लिए एक कमेटी बनाई गई थी। जैसे 2026 में नीट यूजी पेपर लीक के बाद यह कमेटी बनी है वैसे ही 2024 में नीट यूजी पेपर लीक के बाद वह कमेटी बनी थी। राधाकृष्ण कमेटी ने एक सौ ज्यादा सिफारिशें की थीं। एक रिपोर्ट के मुताबिक उनकी 27 सिफारिशें ऐसी हैं, जिन पर ध्यान नहीं दिया गया। कुछ सिफारिशें आंशिक तौर पर मानी गईं और 57 सिफारिशों को पूरी तरह से स्वीकार किया गया। लेकिन उसका क्या नतीजा निकला? दो साल के बाद फिर पेपर लीक हो गया! राधाकृष्ण कमेटी ने सिफारिश की थी नीट यूजी सहित करीब 20 प्रतियोगिता परीक्षाएं कराने वाली नेशनल टेस्टिंग एजेंसी यानी एनटीए में विषय के विशेषज्ञों को शामिल किया जाए। इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया गया। इसके बाद भी पेपर लीक होना जारी है और दूसरी गड़बड़ियां भी हो ही रही हैं तो इसका अर्थ है कि एकमात्र समस्या यह नहीं है कि एनटीए में विषय के विशेषज्ञ नहीं हैं। समस्या संरचनात्मक और व्यवस्थागत है। अगर नंदन नीलेकणी संरचनात्मक समस्याओं को समझ कर उसे ठीक करने का सुझाव देते हैं तब तो ठीक है अन्यथा इसका भी कोई मतलब नहीं होगा। उनके सामने सबसे पहली और बड़ी चुनौती यह है कि क्या वे अखिल भारतीय परीक्षा के सिद्धांत को खत्म करने की सिफारिश करेंगे? क्या वे कहेंगे कि एक बार में 24 लाख छात्रों वाली नीट यूजी की परीक्षा नहीं होनी चाहिए? क्या वे यह सिफारिश कर सकते हैं कि मेडिकल में दाखिले की पुरानी व्यवस्था बहाल हो और नीट यूजी की बजाय राज्यों को अपने कॉलेजों में दाखिले का अधिकार पहले जैसा दिया जाए? यानी शिक्षा और परीक्षा के मामले में राज्यों की स्वायत्तता सुनिश्चित की जाए। अगर नंदन नीलेकणी की कमेटी नीट समाप्त करने और मेडिकल में दाखिले की परीक्षा का विकेंद्रीकरण करने की सिफारिश नहीं करती है तो उनकी सिफारिशों का स्कोप बहुत सीमित हो जाएगा और तब किसी बड़े सुधार की संभावना कम हो जाएगी। अब सवाल है कि अगर नीट समाप्त करने या नीट जैसी दूसरी अखिल भारतीय परीक्षाएं खत्म करने की सिफारिश नीलेकणी कमेटी नहीं करती है तो उसके पास क्या विकल्प बचेगा? सबसे अच्छा तो यही होगा कि नीट को समाप्त किया जाए। लेकिन अगर सरकार की ओर से कमेटी की सिफारिशों का जो स्कोप तय किया जाएगा यानी जो फ्रेमवर्क दिया जाएगा उसमें पहले ही यह स्पष्ट कर दिया जाए कि नीट की परीक्षा जारी रहेगी तो फिर नीलेकणी कमेटी को नीट को इंजीनियरिंग में दाखिले की परीक्षा जेईई की तरह दो चरणों में कराने की सिफारिश करनी चाहिए। ध्यान रहे अगले साल नीट की परीक्षा जेईई की तरह कंप्यूटर आधारित होगी और कई पालियों में होगी। हालांकि उसमें प्रश्नपत्रों की कठिनता के आधार पर अंकों के सामान्यीकरण की अलग समस्या आती है। फिर भी कंप्यूटर बेस्ड परीक्षा पेपर लीक की संभावना को कम करती है। इसके साथ साथ अगर नीट की परीक्षा भी जेईई के तरह दो चरण में हो तो पेपर लीक की संभावना और कम हो सकती है। दो चरण का अर्थ है कि पहले चरण में प्रारंभिक परीक्षा हो और दूसरे चरण में एडवांस परीक्षा हो। पहले चरण में मल्टीपल च्वाइस वाले प्रश्न हों और दूसरे चरण में सब्जेक्टिव प्रश्न पूछे जाएं। इसके अलावा नीलेकणी कमेटी को मेडिकल की पढ़ाई की फीस को नियमित करने के बारे में भी सुझाव देने चाहिए। अभी मेडिकल की परीक्षा में सबसे ज्यादा प्रश्न पत्र इसलिए लीक होते हैं कि एक बार में परीक्षा होती है और 720 अंकों की परीक्षा में अगर अच्छे अंक आ गए तो देश के प्रीमियम संस्थान में बहुत कम फीस में पढ़ने का मौका मिलता है। अन्यथा निजी कॉलेजों में फीस इतनी ज्यादा है कि लोग स्वाभाविक रूप से पेपर लीक पर पैसा खर्च करने के लिए प्रेरित होते हैं। खुद सरकार इसी वजह से इसे हाई स्टेक यानी बड़े दांव वाली परीक्षा मानती है। नीट के बचाव में तर्क दिया जाता है कि इसमें क्वालिफाई करके गरीब बच्चे भी मेडिकल की पढ़ाई कर सकते हैं। यह गलत है। निजी मेडिकल कॉलेजों में फीस एक से डेढ़ करोड़ रुपए तक है। ऐसे में कौन गरीब अपने बच्चों को वहां पढ़ा पाएगा! अगर डोनेशन नहीं देना पड़े तब भी निजी कॉलेजों में मेडिकल की पढ़ाई का खर्च सामान्य लोगों की पहुंच से बाहर है। बहरहाल, नीलेकणी कमेटी को सिर्फ नीट पर विचार नहीं करना है, बल्कि पूरी परीक्षा प्रणाली को दुरुस्त करने के सुझाव देने हैं। इसकी शुरुआत एनटीए से हो सकती है। भारत सरकार ने एक देश, एक परीक्षा की महत्वाकांक्षी योजना के तहत एनटीए का गठन किया। इसके बाद एक एक करके परीक्षाओं को अखिल भारतीय स्वरूप दिया जाने लगा। मेडिकल की परीक्षा के साथ साथ केंद्रीय विश्वविद्यालयों में दाखिले के लिए भी सीयूईटी की परीक्षा ली जाने लगी। इसमें अलग समस्याएं हैं। वास्तविकता यह है कि एनटीए देश में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता सुधार में शून्य योगदान दे रहा है। सो, नीलेकणी कमेटी एनटीए को खत्म करने और पुरानी विकेंद्रित परीक्षा व्यवस्था बहाल करने की सिफारिश करे। सवाल है कि अगर एनटीए को समाप्त करना उसके स्कोप ऑफ वर्क से बाहर हो तो क्या करना चाहिए? तब उसे एनटीए में सुधार की सिफारिश करनी चाहिए। सबसे पहला सुधार तो यह जरूरी है कि एनटीए को कम से कम वैधानिक दर्जा दिया जाए। अगर सरकार चाहती है कि यूपीएससी की तरह इसकी परीक्षाएं विश्वसनीय बनें तो इसे संवैधानिक नहीं तो वैधानिक दर्जा दिया जाए। इसका अपना कैडर बने ताकि तदर्थ ढंग से काम नहीं हो। अभी इधर उधर से ले आकर अधिकारियों को रखा जाता है और गड़बड़ी होने पर बाद में उनको वापस अपने कैडर में भेज दिया जाता है। इससे जवाबदेही नहीं बनती है। इसके बाद ठेके पर नियुक्ति रोकने की सिफारिश की जाए और परीक्षा से जुड़े काम आउटसोर्स करने पर रोक लगे। यूपीएससी की तरह एनटीए का अपना बुनियादी ढांचा बने। विशेषज्ञों की नियुक्ति हो और पूरे साल इसका काम चले। जैसे यूपीएससी की परीक्षा में प्रश्न पत्र के ढेर सारे सेट बनते हैं और किसी को पता नहीं होता है कि परीक्षा में कौन से सेट का इस्तेमाल होगा वैसी व्यवस्था एनटीए द्वारा आयोजित की जाने वाली परीक्षाओं के लिए भी की जाए। एनटीए जिन परीक्षाओं का आयोजन करता है उसके अलावा भी कई एजेंसियां हैं, जो दाखिला और भर्ती परीक्षा आयोजित करती हैं। उनमें भी एनटीए की तर्ज पर ही सुधार की सिफारिश होनी चाहिए। हालांकि सिर्फ कमेटी की सिफारिशों से कुछ खास नहीं होगा। सरकार की मंशा और राजनीतिक इच्छाशक्ति भी होनी चाहिए तभी जरूरी सुधार होंगे।

आखिर क्यों पूरा नहीं कर पाते शिक्षा मंत्री अपना कार्यकाल

मोदी सरकार के कार्यकाल के चारों शिक्षा मंत्रियों में से एक भी अपना विज़न लागू करने के लिए स्वतंत्र नहीं था। रणनीतियां ऊपर से बनती थीं। ये ज़रूर है कि हर मंत्री का उसे लागू करने का तरीक़ा अलग हो सकता है जैसे, स्मृति ईरानी ज़्यादा मुखर थीं, जावड़ेकर रणनीतिक चुप्पी वाले व्यक्ति थे। कॉकरोच जनता पार्टी के आंदोलन ने भारत की शिक्षा व्यवस्था, परीक्षा प्रणाली और सरकार की प्राथमिकताओं पर एक नई बहस छेड़ दी है। सवाल सिर्फ़ इस्तीफा देने वाले शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान पर नहीं, बल्कि मोदी सरकार के दौरान शिक्षा मंत्रालय की पूरी दिशा को लेकर भी उठ रहे हैं। साल 2014 से केंद्र में सत्ता में आने के बाद से अब तक मोदी सरकार में शिक्षा मंत्री रही स्मृति ईरानी, प्रकाश जावड़ेकर, रमेश पोखरियाल 'निशंक' और धर्मेंद्र प्रधान को अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा किए बिना इस्तीफा देने पर मजबूर होना पड़ा। पांचवा शिक्षा मंत्री प्रहलाद जोशी को बनाया गया है, हालांकि जोशी को शिक्षा मंत्रालय का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। मोदी सरकार को तय करना है कि जोशी ही पूर्णकालिक शिक्षा मंत्री रहेंगे या किसी नए चेहरे की तलाश करके उसको स्वतंत्र रूप से शिक्षा मंत्री के पद की जिम्मेदारी सौंपी जाएगी। जोशी भी विवादों में रहे हैं। साल 2002 के गुजरात दंगों के दौरान बिलकिस बानो गैंग रेप और उनके परिवार के सदस्यों की हत्या के मामले में उम्र क़ैद की सज़ा काट रहे 11 दोषियों की समय से पहले रिहाई पर जब चौतरफ़ा सवाल उठ रहे थे, तब प्रल्हाद जोशी ने इसका बचाव किया था। सवाल यही है कि आखिरकार कोई भी शिक्षा मंत्री अपना कार्यकाल क्यों नहीं पूरा कर पाया। मोदी सरकार के 12 साल के कार्यकाल में शिक्षा मंत्रालय ही ऐसा प्रमुख मंत्रालय रहा, जिसकी कमान पांच अलग-अलग मंत्रियों ने संभाली वहीं, गृह, विदेश, वित्त, रक्षा और स्वास्थ्य जैसे मंत्रालयों में अपेक्षाकृत स्थिरता बनी रही। शिक्षा, संस्कृति और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (आईएनबी) ऐसे कुछ चुनिंदा मंत्रालय हैं, जिन्हें सॉफ्ट पावर की तरह देखा जाता है और जो संघ की विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए अहम रहे हैं। यही कारण है कि यहां विवाद ज़्यादा हुए और अस्थिरता भी उतनी ही दिखती है। गौरतलब है कि आईएनबी में 12 साल के भीतर सात केंद्रीय मंत्री और संस्कृति मंत्रालय में पांच केंद्रीय मंत्री बने हैं। मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में स्मृति ईरानी और प्रकाश जावड़ेकर ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय संभाला मोदी के दूसरे कार्यकाल में यह ज़िम्मेदारी रमेश पोखरियाल 'निशंक' को मिली। मगर 2021 में हुए कैबिनेट विस्तार के दौरान धर्मेंद्र प्रधान को केंद्रीय शिक्षा मंत्री बना दिया गया, जिनके इस्तीफ़े की मांग को लेकर एक महीने तक कॉकरोच जनता पार्टी के समर्थक जंतर-मंतर पर बैठे रहे और आख़िरकार केंद्र सरकार दबाव में आई और प्रधान को इस्तीफा देने को मजबूर होना पड़ा। नीट परीक्षा के लीक होने का मामला अलग कर दें, तो संघ से जुड़े उन सभी प्रमुख लक्ष्यों को धर्मेंद्र प्रधान बिना शोर-शराबा किए लागू करा पाने में सफल रहे हैं, जिनकी कोशिश उनके पूर्ववर्तियों ने ज़ोर लगाते हुए की और विवादों में फंसते गए। ग़ौरतलब है कि 2014 में बनी पहली मोदी कैबिनेट में धर्मेंद्र प्रधान को पेट्रोलियम मंत्री बनाया गया, फिर मोदी के दूसरे कार्यकाल में वे शिक्षा मंत्री बने और मोदी के तीसरे कार्यकाल में भी यह ज़िम्मेदारी जारी रही।

प्रधान के शिक्षा मंत्री रहते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) को बढ़ावा मिला। मातृभाषा और कई भाषाओं में शिक्षा को उन्होंने बढ़ावा दिया। मगर तीन-भाषा फ़ॉर्मूला पर तमिलनाडु राज्य सरकार के साथ लंबे समय तक वे विवाद के केंद्र में भी रहे। विरोधियों ने उन पर राजनीतिक हस्तक्षेप और हिंदी थोपने का आरोप लगाया, जिससे शिक्षा नीति केंद्र बनाम राज्य के विवाद का मुद्दा बन गई। मोदी सरकार के कार्यकाल के चारों शिक्षा मंत्रियों में से एक भी अपना विज़न लागू करने के लिए स्वतंत्र नहीं था। रणनीतियां ऊपर से बनती थीं। ये ज़रूर है कि हर मंत्री का उसे लागू करने का तरीक़ा अलग हो सकता है जैसे, स्मृति ईरानी ज़्यादा मुखर थीं, जावड़ेकर रणनीतिक चुप्पी वाले व्यक्ति थे। मोदी के शासन में शिक्षा विभाग में जो भी नीतियां अपनाई गई, वे सभी वाम विचारधारा को हटाने के मक़सद से लागू हुईं। संघ का मक़सद भारत की शिक्षा व्यवस्था से वाम विचारधारा वाली शिक्षा-पद्धति को हटाना है, क्योंकि संघ मानता है कि वे मुग़लों के समर्थक रहे हैं। संघ की नज़र में, मुग़ल घुसपैठिए हैं और देश की मुस्लिम आबादी उनकी वंशज है। संघ पर आरोप लगते रहें कि इस एजेंडे को पूरा मोदी सरकार के जरिए कराया जा रहा है। इसी लक्ष्य को साधने के लिए मोदी सरकार के चार शिक्षा मंत्रियों के चयन का पैमाना रहा है। 'स्मृति ईरानी को छोड़ दें, तो नवनियुक्त शिक्षा मंत्री प्रहलाद जोशी, प्रकाश जावड़ेकर, रमेश पोखरियाल 'निशंक' और धर्मेंद्र प्रधान संघ की पृष्ठभूमि से आते हैं। वाजपेयी के ज़माने में भी संघ से आने वाले मुरली मनोहर जोशी को शिक्षा मंत्री बनाया गया था, जो दर्शाता है कि संघ इस मंत्रालय में अपना दख़ल हमेशा चाहता रहा है। स्मृति ईरानी के साथ उनके नाम पर डिग्री विवाद, जेएनयू विवाद और रोहित वेमुला की आत्महत्या जैसे विवाद जुड़ चुके थे। स्मृति ईरानी संघ की पृष्ठभूमि से नहीं थीं। नई शिक्षा नीति तैयार करने और उसे लागू करने में देरी से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्मृति से बहुत खुश नहीं था। संघ के संदेशों को समझना आसान नहीं है। संघ शोर-शराबा नहीं करता। यही कारण है कि फिलाहल संघ की पृष्ठभमि वाले प्रकाश जोशी को प्राथमिकता देते हुए शिक्षा मंत्रालय का कार्यभार सौंपा गया है। मंत्रालय में स्मृति ईरानी के कार्यकाल के दौरान नई शिक्षा नीति पर काम की शुरुआत हुई। मोदी के कार्यकाल के तीसरे शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' के समय इसे लागू किया गया। शिक्षा मंत्री रहे 'निशंक की पहचान संघ से आने वाले एक विद्वान की रही है, जो संघ के मक़सद को आगे ले जा सकते थे। हालांकि, अपने अवैज्ञानिक बयानों को लेकर भी वे विवादों में आए। उन्होंने यहां तक कहा कि चरक ऋषि ने अणु-परमाणु की खोज की थी। कोविड के समय जेईई-नीट की परीक्षा कराए जाने की घोषणा के बाद निशंक के ख़िलाफ़ काफ़ी ऑनलाइन विरोध हुआ था। विरोध में लोग कोर्ट भी गए, जहां सरकार के पक्ष में फ़ैसला आया। हालांकि, तब बड़ी संख्या में छात्र परीक्षा देने से रह गए, जिसे लेकर विवाद हुआ। उनके समय भी आरोप लगे कि नई शिक्षा नीति के ज़रिए केंद्र सरकार शिक्षा पर नियंत्रण अपने हाथों में लेने की कोशिश कर रही है, जिसे उन्होंने नकार दिया था। शिक्षा मंत्रालय के जरिए मोदी सरकार का सारा जोर संघ को साधने में रहा है, किन्तु शिक्षा के उत्थान के लिए बजट को पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया। इसी कारण शिक्षा मंत्रालय में बजट घटता गया और विवाद बढ़ते गए। केंद्रीय बजट में शिक्षा मंत्रालय की हिस्सेदारी पिछले 12 वर्षों में तेज़ी से घटी है यह हिस्सा 2013-14 में कांग्रेस-नेतृत्व वाली यूपीए सरकार में 4.6% था, जो 2025-26 में घटकर 2.5% रह गया।

चीन में रह रहे भारतीयों ने चौंकाने वाला सच उजागर किया है!

चीन में रह रहे भारतीयों की शिकायतें और भारत में मीडिया की पहुंच को लेकर चीन की नई मांग यह संकेत देती है कि राजनीतिक स्तर पर संवाद बढ़ने के बावजूद जमीनी स्तर पर विश्वास की कमी अब भी पूरी तरह दूर नहीं हुई है। ऐसे समय में जब भारत और चीन के रिश्तों में सुधार की बातें हो रही हैं, वर्षों बाद सीमा व्यापार फिर से शुरू हुआ है और दोनों देशों के बीच राजनीतिक संवाद भी तेज हुआ है, उसी बीच चीन में रह रहे भारतीयों ने ऐसी शिकायतें सामने रखी हैं, जिन्होंने सबको चौंका दिया है। भारतीयों का कहना है कि चीन के सोशल मीडिया पर भारत और भारतीयों के खिलाफ आपत्तिजनक सामग्री तेजी से बढ़ रही है, भारतीय पेशेवरों को नौकरी के वीज़ा मिलने में मुश्किलें आ रही हैं और उनके जीवनसाथियों के रोजगार पर भी कई तरह की पाबंदियां हैं। इतना ही नहीं, भारत में होने वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से पहले चीन ने नई दिल्ली से ऐसी मांग भी कर दी है, जिसने दोनों देशों के संबंधों को लेकर एक नई बहस छेड़ दी है। हम आपको बता दें कि बीजिंग स्थित भारतीय दूतावास ने हाल के वर्षों में पहली बार भारतीय समुदाय के साथ 'ओपन हाउस' कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में भारत के राजदूत विक्रम दोरईस्वामी, काउंसलर (कॉन्सुलर, शिक्षा एवं सामुदायिक मामलों) नितिनजीत सिंह और काउंसलर (वीजा) रमेश सिंह ने विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे भारतीयों से सीधे संवाद किया। इस बातचीत में भारतीय समुदाय ने

जिन मुद्दों को सबसे प्रमुखता से उठाया, वह भारत-चीन संबंधों के वास्तविक हालात की एक अलग तस्वीर पेश करते हैं। भारतीयों ने शिकायत की कि चीन के सोशल मीडिया मंचों पर भारत, भारतीय संस्कृति और भारतीय खान-पान को लेकर अपमानजनक और भड़काऊ सामग्री तेजी से बढ़ रही है। उनका कहना था कि यह केवल ऑनलाइन ट्रोलिंग का मामला नहीं है, बल्कि इससे चीन में रह रहे भारतीयों के सामाजिक माहौल और सुरक्षा की भावना पर भी असर पड़ रहा है। इसके अलावा भारतीय पेशेवरों को नौकरी के लिए वर्क वीज़ा मिलने में लगातार कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। कई लोगों ने यह भी बताया कि उनके जीवनसाथियों को रोजगार की अनुमति नहीं मिलने से परिवारों के सामने गंभीर आर्थिक और सामाजिक चुनौतियां खड़ी हो रही हैं। कुछ लोगों ने दूतावास से जुड़ी काउंसलर सेवाओं में आने वाली व्यावहारिक परेशानियों का मुद्दा भी उठाया। राजदूत विक्रम दोरईस्वामी ने इन चिंताओं को गंभीर बताते हुए कहा कि चीन सरकार स्वयं भी सोशल मीडिया पर बढ़ती भारत-विरोधी सामग्री को लेकर चिंतित है और इस दिशा में कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय दूतावास भी गलत सूचनाओं और दुष्प्रचार का मुकाबला तथ्य आधारित जानकारी साझा करके कर रहा है। इसके साथ ही दूतावास भारतीय संस्कृति, खान-पान और विविधता को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने के लिए वसंत मेला जैसे लोकप्रिय सांस्कृतिक आयोजनों का दायरा बढ़ाने की योजना बना रहा है ताकि चीन में भारत की सकारात्मक छवि और मजबूत हो सके। दोरईस्वामी ने यह भी बताया कि भारतीय पेशेवरों को रोजगार संबंधी विवादों में कानूनी सहायता उपलब्ध कराने के लिए दूतावास वकीलों और कानूनी विशेषज्ञों का एक सहयोगी नेटवर्क तैयार कर रहा है। उन्होंने संकेत दिया कि भारतीयों की समस्याओं के समाधान के लिए ऐसे 'ओपन हाउस' कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाएंगे। वहीं, चीन के नागरिकों के लिए भारतीय वीज़ा प्रक्रिया को भी और सरल बनाने की तैयारी की जा रही है ताकि दोनों देशों के बीच लोगों का आवागमन बढ़ सके। दूसरी ओर, भारत में सितंबर में होने वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से पहले चीन की एक और पहल ने नई कूटनीतिक चर्चा को जन्म दे दिया है। जानकारी के अनुसार, चीनी दूतावास ने भारत सरकार के समक्ष यह चिंता जताई है कि फालुन गोंग और तिब्बती समुदाय से जुड़े मीडिया संगठनों को सम्मेलन के दौरान सीमित पहुंच दी जाए। चीन नहीं चाहता कि ऐसे मीडिया संस्थानों को उसके प्रतिनिधिमंडल से सवाल पूछने या सम्मेलन के मीडिया कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर मिले। हम आपको बता दें कि फालुन गोंग चीन में प्रतिबंधित आध्यात्मिक संगठन है और उससे जुड़े कई मीडिया संस्थान, जैसे 'द एपॉक टाइम्स', चीन की नीतियों के आलोचक रहे हैं। इसी तरह भारत में बड़ी संख्या में तिब्बती शरणार्थी रहते हैं और धर्मशाला सहित कई स्थानों से तिब्बती समुदाय के अपने मीडिया संस्थान संचालित होते हैं। भारत अब तक इन संगठनों को देश के कानूनों के दायरे में स्वतंत्र रूप से काम करने की अनुमति देता रहा है। ऐसे में चीन की यह मांग केवल मीडिया प्रबंधन का मुद्दा नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था की कसौटी के रूप में भी देखी जा रही है। हम आपको यह भी बता दें कि चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के ब्रिक्स सम्मेलन में शामिल होने के लिए भारत आने की संभावना जताई जा रही है। यदि यह यात्रा होती है तो जिनपिंग सात साल बाद भारत की धरती पर होंगे। उल्लेखनीय है कि 2020 के गलवान संघर्ष के बाद दोनों देशों के संबंध बेहद तनावपूर्ण हो गए थे, लेकिन अक्टूबर 2024 में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के विवादित क्षेत्रों से सैनिकों की वापसी पर सहमति बनने के बाद रिश्तों में धीरे-धीरे सुधार शुरू हुआ। इसके बाद दोनों देशों के शीर्ष नेताओं की कई मुलाकातें हुईं, भारत ने चीनी नागरिकों के लिए वीज़ा फिर से जारी करना शुरू किया और चीन ने कैलाश मानसरोवर यात्रा भी बहाल कर दी। बहरहाल, चीन में रह रहे भारतीयों की शिकायतें और भारत में मीडिया की पहुंच को लेकर चीन की नई मांग यह संकेत देती है कि राजनीतिक स्तर पर संवाद बढ़ने के बावजूद जमीनी स्तर पर विश्वास की कमी अब भी पूरी तरह दूर नहीं हुई है। यही वजह है कि दोनों देशों के रिश्ते फिलहाल सहयोग और संदेह, इन दोनों के बीच संतुलन साधने की चुनौती से गुजर रहे हैं। आने वाला ब्रिक्स शिखर सम्मेलन केवल आर्थिक और रणनीतिक सहयोग का मंच नहीं होगा, बल्कि यह भी तय करेगा कि भारत और चीन अपने रिश्तों को वास्तविक विश्वास और पारदर्शिता की दिशा में कितना आगे ले जा पाते हैं।

आज का राशि फल

मेष राशि: आज का दिन जीवन में मील का पत्थर साबित होगा। वकीलों के लिये आज का दिन अच्छा रहेगा, नया केस हाथ लगेगा। आज खास लोगों के बीच किसी नई गतिविधि को लेकर गंभीर चर्चा होगी, जो कि सकारात्मक रहेगी। आज किसी मामले को लेकर विचारों में भावुकता रहेगी। आज कुछ लोग जलन की भावना से आपकी आलोचना कर सकते हैं।

वृष राशि: आज आपका दिन ठीक-ठाक रहने वाला है। आज आपको किसी भी प्रकार के विवादों से दूर रहने की आवश्यकता है। आज व्यवसायिक काम समय पर बनते जाएंगे। विदेश संबंधी व्यवसाय में परिस्थितियां आपके अनुकूल होने के आसार हैं। आज ऑफिस में सहयोगियों की कार्यकुशलता से टारगेट समय पर पूरा हो जाएगा।

मिथुन राशि: आज आपके हर परेशानी का हल चुटकियों में निकल जायेगा। आज आप लेखन कार्यों में रुचि लेंगे आपका लेखन और अच्छा होगा। आज आपकी बातें दूसरों पर प्रभाव डालेगी। आज रोजमर्रा के कामों से हटकर कुछ नया सीखने में समय बीतेगा। प्रॉपर्टी या वाहन की खरीददारी में लाभ की बेहतर स्थिति बनेगी। आध्यात्म और धार्मिक गतिविधियों में आपका रुझान बढ़ेगा।

कर्क राशि: आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। बड़े निर्णय लेने के लिए दिन अच्छा है। किसी नयी बिजनेस डील के लिए ऑफर मिलेगा। थोड़ी सी बात पर परेशान होने के बजाय उसका हल ढूंढने की कोशिश करेंगे तो आपको सलूशन मिल जायेगा। आप जीवनसाथी के साथ घर के कार्यों को पूरा करने में व्यस्त रहेंगे। मेडिकल की पढ़ाई कर रहे छात्रों के लिए दिन अच्छा है।

सिंह राशि: आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आज व्यवसाय में अतिरिक्त आय का साधन बनने वाला है। अगर आपका साझेदारी में बिजनेस करने का प्लान है तो ये डील आपके लिए फायदेमंद होगी। अधिकतर समय मार्केटिंग और बाहर की गतिविधियों में बीतेगा। इस राशि के सरकारी नौकरी कर रहे लोग अपने कार्यभार से संतुष्ट रहेंगे। आपको घर के बड़ो से कुछ प्रेरणा मिलेगी। आज आप जो भी काम शुरू करेंगे, वो सफल होगा।

कन्या राशि: आज आपका दिन बेहतरीन रहने वाला है। आज ध्यान रखें कि अगर प्रयासरत कार्यों में समस्या आती है तो इसकी वजह आपकी एकाग्रता में कमी होगी। आज सम्मानित और प्रभावशाली लोगों के संपर्क में आने से आपको कई नए विषयों की जानकारी मिलेगी। आज घर के लिए इलेक्ट्रॉनिक वस्तु की खरीदारी संभव है। लोग आपके व्यवहार से खुश रहेंगे।

तुला राशि: आज का दिन आपके लिये अच्छे परिणाम लाने वाला होगा। आज घरवालों के साथ अच्छा समय बिताने को मिलेगा, जिससे परिवार का माहौल खुशनुमा रहेगा। आज किसी समस्या को हल करने में आपका सहयोग सकारात्मक रहेगा। आस-पड़ोस की सामाजिक गतिविधियों में आपका वर्चस्व रहेगा। प्रॉपर्टी से संबंधित काम हल होगा। आज नकारात्मक लोगों से दूर रहेंगे और आलस की स्थिति से बचेंगे तो आपका काम समय से पूरा हो जायेगा।

वृश्चिक राशि: आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। आज कार्यों को सुचारु रूप से करने के लिए ज्यादा मेहनत करनी होगी। हालांकि सही समय पर उचित निर्णय लेने से आपकी काफी समस्याएं हल हो जाएंगी। इस समय नया कार्य शुरू न करें, आज के कामों को ही व्यवस्थित करने पर ध्यान देंगे। ऑफिस में आपका प्रभुत्व बना रहेगा। नवविवाहित दंपत्ति के बीच आज मीठी नोक-झोक होगी, इससे रिश्तों में और मिठास आयेगी। स्वास्थ्य के लिहाज से आज का दिन अच्छा रहने वाला है।

धनु राशि: आज पूरे दिन भाग्य आपके साथ रहेगा। आज जल्दबाजी में फैसला न लें, न ही दूसरों के मामले में हस्तक्षेप करें। आज किसी अनजान व्यक्ति के सहयोग से आपका मन प्रसन्न रहेगा। आज आप अपने खर्चों पर नियंत्रण बनाने की योजना बनायेंगे। साथ ही आय बढ़ाने के लिए नया प्लान बनायेंगे। छात्रों के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है किसी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने का मन बनायेंगे। कला जगत से जुड़े लोगों के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है।

मकर राशि: आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। छात्रों को आज बहुत अधिक मेहनत करने की जरूरत है। आज आप लेनदेन को स्थगित रखेंगे तो आने वाली किसी समस्या से बच जायेंगे। इस राशि के लोगों को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे, जिससे उनके अंदर आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आपकी ऑफिशियल यात्रा संभव है।

कुंभ राशि: आज का दिन मिली-जुली प्रतिक्रिया देने वाला रहेगा। आज आपका दिन खुशनुमा बीतेगा। घर पर ही परिवारवालों के साथ धार्मिक कार्यों का आयोजन करेंगें। आज आपकी तरक्की के कई रास्ते खुलेंगे। ऑफिस के काम को थोड़ा संभलकर करने की जरूरत है, आपके काम की शिकायत कर सकता है। आज किसी से भी उलझने से आपको बचना चाहिए।

मीन राशि: आज आपको किसी अपने से अच्छी खबर मिलने के योग बने हुये है। आज व्यक्तिगत काम के समय आप घबराने की बजाय परिस्थितियों का समाधान ढूंढने का प्रयास करेंगे और इसमें आप सफल भी होंगे। परिवारिक सदस्य की किसी उपलब्धि से घर में उत्सव का माहौल रहेगा। मार्केटिंग की जॉब कर रहे लोगों से आज अच्छा क्लाइंट जुड़ेगा।

आदित्य विश्वविद्यालय में "डिजाइन योर डेस्टिनी" करियर मार्गदर्शन सेमिनार आयोजित

गंडेपल्ली, 5 अगस्त। सूरमपालेम स्थित आदित्य विश्वविद्यालय के पेट्रोलियम एवं माइनिंग विभाग द्वारा "डिजाइन योर डेस्टिनी" विषय पर करियर मार्गदर्शन सेमिनार आयोजित किया गया। इस अवसर पर पूर्व छात्र पी. टी. वेंकटेश (असिस्टेंट ड्रिलर, अबू धाबी), आर. अभिलाष (सेफ्टी हेड, दुबई) तथा आई. दिनेश, सीईओ एवं संस्थापक, डेस्टिनी इनोवेशन हब ने छात्रों को पेट्रोलियम एवं माइनिंग क्षेत्र में रोजगार के अवसरों, उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल, नेतृत्व क्षमता, व्यक्तित्व

विकास और करियर योजना पर मार्गदर्शन दिया। विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने छात्रों से उद्योग की जरूरतों के अनुरूप अपने कौशल का विकास कर उज्ज्वल भविष्य बनाने का आह्वान किया।

सचिवालय कर्मचारियों की उपस्थिति पर कलेक्टर ने जताई नाराजगी

पाडेरू, 5 अगस्त। जिला कलेक्टर टी. निशांति ने सचिवालय कर्मचारियों की कम उपस्थिति पर नाराजगी व्यक्त करते हुए अगले एक सप्ताह तक प्रतिदिन उपस्थिति रिपोर्ट संयुक्त कलेक्टर को सौंपने के निर्देश दिए। बुधवार को विभागीय समीक्षा बैठक में कलेक्टर ने कहा कि फील्ड स्तर से लेकर जिला स्तर तक सभी कर्मचारी नियमित रूप से ड्यूटी पर उपस्थित रहें और जिम्मेदारी के साथ कार्य करें। उन्होंने शिक्षकों और स्वास्थ्य कर्मियों की उपस्थिति की भी नियमित निगरानी करने, कमजोर प्रदर्शन वाले विभागों से कार्ययोजना तैयार कराने तथा बिना उचित कारण ड्यूटी से अनुपस्थित रहने वाले कर्मचारियों के विरुद्ध कार्रवाई करने की चेतावनी दी।

जिला गठन के बाद पहली बार भव्य रूप से मनाया जाएगा स्वतंत्रता दिवस

रम्पाचोडवरम, 5 अगस्त। पोलावरम जिला कलेक्टर के. दिनेश कुमार ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि जिले के गठन के बाद पहली बार आयोजित होने वाले स्वतंत्रता दिवस समारोह को भव्य एवं देशभक्ति की भावना के अनुरूप आयोजित किया जाए। बुधवार को तैयारियों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने गार्ड ऑफ ऑनर, परेड, झांकियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पुलिस बैंड, डॉग स्क्वाड तथा अग्निशमन विभाग के प्रदर्शन आयोजित करने के निर्देश दिए। उन्होंने आदिवासी कल्याण विद्यालयों और सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने तथा सभी विभागों के समन्वय से समारोह को सफल बनाने पर जोर दिया।

17 अगस्त से सिंगल–यूज प्लास्टिक पर सख्त प्रतिबंध लागू होगा

गुंटूर, 5 अगस्तः गुंटूर नगर निगम आयुक्त के. मयूर अशोक ने कहा कि शहर में 17 अगस्त से सिंगल–यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध को सख्ती से लागू किया जाएगा। इसके लिए उप आयुक्तों, स्वास्थ्य अधिकारियों और स्वच्छता पर्यवेक्षकों की एक विशेष टास्क फोर्स का गठन किया गया है। यह टीम प्रतिबंधित प्लास्टिक के निर्माण, भंडारण, परिवहन, बिक्री और उपयोग पर विशेष निगरानी रखेगी। उल्लंघन करने वालों के खिलाफ प्रतिबंधित सामग्री जब्त करने, भारी जुर्माना लगाने तथा बार–बार नियम तोड़ने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही, सभी वार्डों में जागरूकता अभियान चलाकर नागरिकों और व्यापारियों को पर्यावरण–अनुकूल विकल्प अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

विश्व आदिवासी दिवस विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया जाएगा

रम्पाचोडवरम, 5 अगस्त। *पोलावरम जिला कलेक्टर के. दिनेश कुमार ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रम्पाचोडवरम क्षेत्र में आदिवासी संस्कृति, इतिहास, परंपराओं और जीवनशैली को प्रदर्शित करने वाले विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। बुधवार को आईटीडीए कार्यालय में आयोजित समीक्षा बैठक में कलेक्टर ने कहा कि समारोह में रम्पा विद्रोह पर प्रदर्शनी, अल्लूरी सीताराम राजू से प्रेरित सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, पारंपरिक आदिवासी नृत्य, लोक कला, आदिवासी व्यंजनों की प्रदर्शनी तथा खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं। उन्होंने सभी विभागों के समन्वय, आदिवासी समुदाय की सक्रिय भागीदारी तथा स्वच्छता, पेयजल, सुरक्षा और चिकित्सा सुविधाओं की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।*

पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधे लगाएँ : प्रकाशम एसपी

ओंगोल, 5 अगस्तः प्रकाशम जिले के पुलिस अधीक्षक वी. हर्षवर्धन राजू ने लोगों से पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने की अपील की। मिशन हरित आंध्र कार्यक्रम के तहत बुधवार को जिला पुलिस कार्यालय परिसर में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि बढ़ते वायु प्रदूषण को रोकने के लिए वाहन उपयोग और प्लास्टिक के इस्तेमाल को कम करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण की रक्षा करना हम सभी की जिम्मेदारी है। इस कार्यक्रम में पुलिस अधिकारी, कर्मचारी तथा छात्र–छात्राओं ने भाग लिया।

कानून-व्यवस्था और सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम पर विशेष निगरानी : आईजी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी

ओंगोल, 5 अगस्तः गुंटूर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक (आईजी) सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी ने मंगलवार रात संतमागुलूरु सर्किल के अंतर्गत बल्लिकुरवा पुलिस थाने का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने कानून–व्यवस्था, अपराध नियंत्रण, लंबित मामलों की जांच तथा पुराने अपराधियों की गतिविधियों की समीक्षा की और पुलिस अधिकारियों को सतर्कता बढ़ाने के निर्देश दिए। आईजी ने सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए तेज रफ्तार, नशे की हालत में वाहन चलाने तथा हेलमेट और सीट बेल्ट नियमों के उल्लंघन के खिलाफ विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए। उन्होंने सामुदायिक पुलिसिंग को मजबूत करने, रात्रि गश्त बढ़ाने और आम जनता की शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई कर पुलिस के प्रति विश्वास बढ़ाने पर भी जोर दिया।

चिंतूर डिवीजन में बाढ़ प्रभावितों के लिए व्यापक राहत व्यवस्था : कलेक्टर के. दिनेश कुमार

रम्पाचोडवरम, 5 अगस्त। पोलावरम जिले के कलेक्टर के. दिनेश कुमार ने कहा कि चिंतूर डिवीजन के चारों मंडलों में बाढ़ प्रभावित लोगों को किसी प्रकार की कठिनाई न हो, इसके लिए जिला प्रशासन ने व्यापक राहत एवं बचाव कार्य किए। प्रभावित परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाकर आवश्यक खाद्य सामग्री तथा अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं।

बुधवार को मीडिया से बातचीत करते हुए कलेक्टर ने बताया कि चिंतूर, कुनावरम, वी.आर. पुरम और एटापाका मंडलों के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की पहचान कर प्रथम चेतावनी जारी होते ही राहत अभियान शुरू कर दिया गया। संयुक्त कलेक्टर सुरपति प्रशांत कुमार, आईटीडीए परियोजना अधिकारी शुभम नोकवाल तथा चिंतूर पुलिस अधीक्षक बी. हेमंत के नेतृत्व में अधिकारियों को सतर्क रखते हुए प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया।

उन्होंने बताया कि राहत कार्यों के लिए 17 सेक्टर अधिकारियों की नियुक्ति की गई तथा बेहतर

समन्वय के लिए वायरलेस संचार व्यवस्था स्थापित की गई। आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति और लोगों के सुरक्षित स्थानांतरण के लिए 22 नौकाएं तथा ट्रैक्टरों की व्यवस्था की गई।

कलेक्टर ने बताया कि बाढ़ प्रभावितों के लिए 1,664.403 मीट्रिक टन चावल उपलब्ध कराया गया। चारों मंडलों में पेयजल, बिजली तथा 65 विशेष चिकित्सा शिविरों की व्यवस्था की गई। पशुओं को भी सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाकर नुकसान से बचाने के उपाय किए गए। उन्होंने बताया कि 10,828 प्रभावित परिवारों को राहत सहायता प्रदान की गई तथा 11,801 किलोग्राम आवश्यक सामग्री वितरित की गई। गंभीर रूप से प्रभावित क्षेत्रों से 2,124 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया और 15 राहत शिविर स्थापित किए गए। कलेक्टर ने कहा कि 149 गर्भवती महिलाओं की पहचान कर उन्हें निकटवर्ती प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में स्थानांतरित किया गया, ताकि उन्हें समय पर चिकित्सा सुविधाएं मिल सकें। बाढ़ का पानी घटने के बाद प्रभावित गांवों में बिजली और पेयजल सेवाएं बहाल कर दी गई हैं तथा संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए व्यापक स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। बाढ़ की स्थिति संबंधी विस्तृत रिपोर्ट राज्य सरकार को भी भेज दी गई है।

कलेक्टर के. दिनेश कुमार ने राहत एवं बचाव कार्यों में दिन–रात कार्य करने वाले विभिन्न विभागों के अधिकारियों, कर्मचारियों, पुलिस, चिकित्सा दलों तथा अन्य सभी सहयोगियों के प्रति जिला प्रशासन की ओर से आभार व्यक्त किया।

जनगणना–2027 की तैयारियां योजनाबद्ध तरीके से हों : कलेक्टर डॉ. जी. लक्ष्मीशा

विजयवाड़ा, 5 अगस्तः जिला कलेक्टर डॉ. जी. लक्ष्मीशा ने अधिकारियों को जनगणना–2027 की तैयारियां योजनाबद्ध ढंग से करने तथा जिला जनगणना हैंडबुक को एक प्रमाणिक दस्तावेज के रूप में तैयार करने के निर्देश दिए। बुधवार को कलेक्ट्रेट में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में उन्होंने कहा कि सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग और बुनियादी ढांचे से संबंधित सटीक आंकड़ों का संग्रह जिला विकास योजनाओं के लिए अत्यंत

आवश्यक है। उन्होंने सभी जानकारियों का संबंधित विभागों से सत्यापन करने, चरणबद्ध प्रशिक्षण आयोजित करने तथा बेहतर समन्वय के साथ विश्वसनीय जनगणना आंकड़े तैयार करने पर जोर दिया।

स्वतंत्रता दिवस की तैयारियों की मुख्य सचिव ने की समीक्षा

गुंटूर, 5 अगस्तः सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी) की प्रमुख सचिव जे. श्यामला राव ने बुधवार को राजधानी के परेड ग्राउंड में स्वतंत्रता दिवस समारोह की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आयोजन स्थल का निरीक्षण कर परेड, बैठक व्यवस्था, पेयजल, स्वच्छता, पार्किंग और यातायात प्रबंधन की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी विभागों को अपनी झांकियों (टेबलो) की तैयारियां समय पर पूरी करने तथा 13 अगस्त को होने वाले अंतिम रिहर्सल में पूर्ण रूप से भाग लेने के निर्देश देते हुए सभी विभागों से समन्वय के साथ समारोह को सफल बनाने का आह्वान किया।

द्वारका बस स्टेशन पर महिलाओं की सुरक्षा के लिए विशेष कदम

विशाखापट्टनम, 5 अगस्त। शहर के पुलिस आयुक्त शंखब्रत बागची ने बुधवार को एपीएसआरटीसी के द्वारका बस स्टेशन का निरीक्षण कर सुरक्षा व्यवस्थाओं की समीक्षा की।

उन्होंने सीसीटीवी निगरानी को और मजबूत करने तथा पुलिस चेक पोस्ट के पास सीसीटीवी की निगरानी में महिला सुरक्षा कियोस्क स्थापित करने के निर्देश दिए। साथ ही द्वारका बस स्टेशन और शहर के अन्य प्रमुख बस अड्डों पर पुलिस गश्त बढ़ाने का भी आदेश दिया। निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने यात्रियों की सुविधाओं और स्वच्छता की समीक्षा की तथा बस स्टेशन की साफ–सफाई पर संतोष व्यक्त करते हुए सुरक्षा व्यवस्था को और बेहतर बनाने के लिए आवश्यक सुझाव दिए।

भारत मेरी मां तो पाकिस्तान मौसी है : फिल्म बंटवारा 1947 के प्रमोशन के दौरान सन्नी देओल ने दिया बयान, हुए ट्रोल

फिल्म 'बंटवारा 1947' की रिलीज से पहले सनी देओल अपने एक बयान को लेकर विवादों में आ गए। पटना में फिल्म के प्रमोशन के दौरान उन्होंने अपने पिता धर्मेंद्र के एक पुराने बयान का जिक्र करते हुए पाकिस्तान को मौसी बताया, जिसके बाद सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने उन्हें ट्रोल किया।

दरअसल सनी से सवाल किया गया कि यह मूवी, जो पाकिस्तान में शूट की गई है, तो आप पाकिस्तान को एक देश या माहौल के तौर पर कैसे देखते हैं? क्या आप कुछ बताना चाहेंगे?

इस पर सनी ने बताया कि फिल्म की शूटिंग पाकिस्तान में नहीं हुई, बल्कि फिल्म हिंदुस्तान में ही शूट हुई है।

उन्होंने आगे कहा, "हम कोई ऐसी बातें नहीं करते, क्योंकि पूरा देश एक ही था। जैसे पापा ने कहा था कि मेरी मां (भारत) तो वो मेरी मौसी (पाकिस्तान) है, जो आप लोग अच्छी तरह से समझते हैं। हम सब एक तरह से हैं, तो कहीं न कहीं से जुड़े हुए हैं।"

सनी देओल के इस बयान पर सोशल मीडिया पर कई लोगों ने प्रतिक्रिया दी। कुछ यूजर्स ने उनके बयान की आलोचना की।

एक यूजर ने लिखा, सनी देओल हर नए वीडियो से अपनी छवि को और नुकसान पहुंचा रहे हैं। दूसरे ने कहा, मुझे यह व्यक्ति बिल्कुल पसंद नहीं है।

वहीं एक अन्य यूजर ने लिखा, "पूरे परिवार को बर्बाद करने वाली मौसी वाली बात सही है।" 'बंटवारा 1947' विभाजन की कहानी पर आधारित है

बता दें कि सनी देओल की अपकमिंग फिल्म 'बंटवारा 1947' भारत के विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। फिल्म की कहानी हिंसा, विस्थापन और पारिवारिक संघर्ष से जूझ रहे एक परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है। फिल्म में सनी देओल के साथ शबाना आजमी, प्रीति जिंटा, अली फजल और अभिमन्यु सिंह भी अहम भूमिकाओं में हैं।

फिल्म की रिलीज से पहले सनी देओल रविवार देर शाम पटना में स्थित तख्त श्री हरमंदिर जी पटना साहिब पहुंचे। यहां उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह जी के जन्मस्थान पर मत्था टेककर आशीर्वाद लिया।

गुरुद्वारा प्रबंधन कमेटी के पदाधिकारियों ने सनी देओल का पारंपरिक तरीके से स्वागत किया। उन्हें सिरोपा भेंट कर सम्मानित किया गया और गुरु घर की परंपराओं से अवगत कराया गया। इसके बाद उन्होंने फिल्म के प्रमोशन में हिस्सा लिया।

सनी देओल लगभग 20 मिनट तक गुरुद्वारा परिसर में रहे। इस दौरान उन्होंने तख्त श्री हरमंदिर साहिब के विभिन्न हिस्सों का भ्रमण किया, गुरु इतिहास की जानकारी ली और श्रद्धालुओं के साथ समय बिताया। उन्होंने गुरु का पावन प्रसाद भी ग्रहण किया।

दर्शन के बाद सनी देओल ने कहा कि गुरु के दरबार में आकर उन्हें अद्भुत शांति और आत्मिक सुकून का अनुभव हुआ। उन्होंने बताया, "मेरा हमेशा से मन था कि जब भी बिहार आऊं, सबसे पहले तख्त श्री हरिमंदिर साहिब में मत्था टेककर गुरु महाराज का आशीर्वाद जरूर लूं। आज मेरा यह सपना पूरा हो गया।"

मां बनने के बाद शो में वापसी करना मुश्किल : रुबीना दिलैक

टेलीविजन इंडस्ट्री की लोकप्रिय अभिनेत्री रुबीना दिलैक दो जुड़वा बच्चों को जन्म देने के बाद अब 'खतरों के खिलाड़ी सीजन 15' (डर का नया दौर) में नजर आएंगी। अभिनेत्री ने मां बनने के बाद शो में वापसी करना फिजिकल चुनौतियों से भरपूर था। अभिनेत्री ने बताया कि प्रेग्नेंसी के बाद उनकी बॉडी में कई तरह के बदलाव हुए हैं। रुबीना ने कहा कि उन्हें शो में हिस्सा लेने से पहले कुछ और साल इंतजार करना चाहिए था। रुबीना दिलैक ने कहा, मुझे पहले स्टंट में ही एहसास हो गया था कि किया मुझे और भी स्ट्रॉन्ग बनने के लिए 4-5 साल और इंतजार करना चाहिए था। फिर वापस आना चाहिए था। इस शो में फिजिकली स्ट्रॉन्ग बनने से कहीं ज्यादा मेंटल रेजिलिएंस मायने रखता है। उन्होंने आगे कहा, शो में स्टंट के दौरान मुझे समझ में आ गया था कि अब या फिर कभी नहीं क्योंकि रेजिलिएंस, आपकी मेंटल स्टेबिलिटी, समय और कोई भी ट्रेनिंग इसे बेहतर नहीं बना सकती।

अभिनेत्री ने इस बात पर जोर दिया कि अपने स्टंट करने के लिए हिम्मत अंदर से ही आती है न कि किसी वर्कआउट से। उन्होंने कहा, मेरे अंदर के स्ट्रॉन्ग माइंडसेट ने मुझे फिजिकल लिमिटेशन के बावजूद मुश्किल चुनौतियों से निपटने में मदद की थी, तो माइंडसेट एक ऐसी चीज थी जिसे लेकर मैं सच में मजबूत थी। और फिर फिजिकल तौर पर यह बहुत चैलेंजिंग था।

एडवेंचर रियलिटी शो में अपने पिछले अपीयरेंस से अपने लेटेस्ट स्टिंट की तुलना करते हुए, रुबीना ने बताया कि मां बनने के बाद उन्होंने तुरंत अपनी फिजिकल एबिलिटीज में फर्क महसूस किया। उन्होंने कहा, जब मैंने पहला सीजन किया था, तब भी उसमें कई फिजिकल चैलेंज थे, लेकिन जब मैं इस बार आई, तो मुझे एहसास हुआ कि अब मेरे शरीर में कई तरह के बदलाव हुए हैं।

बता दें कि रुबीना ने 2023 में पति अभिनव शुक्ला के साथ जुड़वां बेटियों जीवा और एधा का स्वागत किया। वह अभी फिल्ममेकर रोहित शेट्टी द्वारा होस्ट किए जा रहे 'खतरों के खिलाड़ी 15' में सभी चैलेंज का सामना करती हुई दिखाई दे रही हैं।

अक्षय खन्ना सच में कमाल के अभिनेता : अनिल कपूर

बायोग्राफिकल ड्रामा फिल्म 'गांधी, माई फादर' ने सोमवार को अपनी रिलीज के 19 साल पूरे कर लिए हैं। इस मौके पर फिल्म के निर्माता अनिल कपूर ने सोशल मीडिया के जरिए फिल्म का जश्न मनाया। साथ ही, अक्षय खन्ना के अभिनय की जमकर सराहना की। अनिल कपूर ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर फिल्म का पोस्टर पोस्ट किया। इसके साथ उन्होंने अक्षय खन्ना को इंडियन फिल्म इंडस्ट्री के 'सबसे अच्छे एक्टर' में से एक कहा। उन्होंने लिखा, अगर आपने अभी तक इस फिल्म को नहीं देखा है, तो मुझे सच में उम्मीद है कि आप इसे देखेंगे।

यह एक ऐसी फिल्म है जिस पर मुझे बहुत गर्व है, और यह मेरे साथ हमेशा रहेगी। आपको यह जहां भी मिले, इसे जरूर देखें। इसी के साथ स्टोरीज सेक्शन के दूसरी स्लाइड पर अभिनेता अनिल कपूर ने अक्षय खन्ना के साथ तस्वीर शेयर करते हुए लिखा, आज अक्षय खन्ना को दर्शकों की तरफ से ढेर सारे प्यार को देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

मैंने हमेशा माना है कि वह हमारे सबसे अच्छे एक्टर्स में से एक हैं और फिल्म 'गांधी, माई फादर' में उन्होंने सच में कमाल की अदाकारी की थी। अगर किसी ने भी फिल्म देखी है, तो मुझे लगता है कि आप ठीक-ठीक समझ गए होंगे कि मैं कहना क्या चाहता हूं।

साल 2007 में फिरोज अब्बास खान के निर्देशन में बनी और अनिल कपूर द्वारा निर्मित फिल्म महात्मा गांधी और उनके सबसे बड़े बेटे हरिलाल गांधी के बीच के तनावपूर्ण और दर्दनाक रिश्तों पर आधारित थी। फिल्म में अक्षय के साथ, दर्शन जरीवाला, भूमिका चावला और शेफाली शाह भी अहम रोल में हैं।

फिल्म के जरिए निर्देशक ने महात्मा गांधी के महान व्यक्तित्व के साये में अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष कर रहे उनके बेटे हरिलाल की असफलताओं और दोनों के बीच की भावनात्मक दूरियों को दर्शाया है।

यह फिल्म महात्मा गांधीजी की महानता के बजाय एक आम इंसान और पिता के रूप में उनके पहलुओं को उजागर करती है। हरिलाल अपने पिता की विशाल छाया और उनके कठोर सिद्धांतों के बीच अपनी अलग पहचान बनाने के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं। वैचारिक मतभेदों के कारण पिता-पुत्र के बीच बढ़ती दूरियों और हरिलाल के जीवन में आए त्रासद, शराब की लत व अकेलेपन को बेहद मार्मिक ढंग से दिखाया गया है।

तृषा कृष्णन पर कब-कब साधा गया निशाना, हुआ हंगामा

तमिलनाडु में कावेरी जल विवाद पर आयोजित रैली के दौरान डीएमके नेता और पूर्व मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के बेटे उदयनिधि स्टालिन ने ऐसा बयान दिया, जिस पर हंगामा हो रहा है। उन्होंने कथित तौर पर साउथ इंडस्ट्री की चर्चित अभिनेत्री तृषा पर यह टिप्पणी की थी। उनकी टिप्पणी को लेकर आलोचना हो रही है। यह पहली बार नहीं है, जब तृषा पर निशाना साधा गया हो। इससे पहले भी उन पर तमाम लोगों ने मर्यादा का उल्लंघन कर आपत्तिजनक और अभद्र टिप्पणी की हैं।

मंसूर अली खान के बयान पर हुआ था विवाद

साल 2023 में अभिनेता मंसूर अली खान ने फिल्म 'लिओ' की सफलता के बाद तृषा कृष्णन को लेकर एक आपत्तिजनक और अपमानजनक टिप्पणी की थी। इस पर महिला आयोग ने भी मंसूर अली खान के खिलाफ एक्शन लिया था। दरअसल, तृषा और मंसूर अली खान ने लोकेश कनगराज की फिल्म 'लियो' में साथ काम किया था। हालांकि, फिल्म में दोनों ने स्क्रीन स्पेस साझा नहीं किया था।

फिल्म के बाद मंसूर अली खान ने कहा था, 'जब मैंने सुना कि मैं तृषा के साथ काम कर रहा हूं, तो मैंने सोचा कि फिल्म में एक बेडरूम सीन होगा। लेकिन इन लोगों ने कश्मीर शेड्यूल के दौरान सेट पर तृषा को मुझे दिखाया भी नहीं'। इस टिप्पणी पर तृषा ने नाराजगी जाहिर करते हुए मंसूर के साथ कभी काम न करने की बात कही थी।

एवी राजू ने की थी टिप्पणी

इतना ही नहीं, फरवरी 2024 में तृषा कृष्णन पर एआईडीएमके के पूर्व नेता एवी राजू ने अभद्र टिप्पणी करते हुए एक आरोप लगाया था। राजनेता ने एक्ट्रेस की निजी जिंदगी पर बेहद आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। इसका अदाकारा ने पुरजोर विरोध किया था। तृषा ने सोशल मीडिया पोस्ट साझा कर उन्हें लताड़ लगाई थी और उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की बात कही थी। कई और लोगों ने तृषा के पक्ष में आवाज उठाते हुए इस टिप्पणी की आलोचना की थी। बाद में एवी राजू ने माफी मांगी थी।

नैयनार नागेंद्रन ने की थी टिप्पणी

भाजपा नेता नैयनार नागेंद्रन की भी तृषा पर कुछ ऐसी ही टिप्पणी पर काफी हंगमा हुआ था। फरवरी 2026 में नागेंद्रन ने अभिनेता विजय और तृषा के रिश्तों को लेकर एक अभद्र और राजनीतिक टिप्पणी की थी। उनके कमेंट पर तृषा ने तुरंत पलटवार करते हुए इसे कायरतापूर्ण बताया था।

आर. पार्थिवन ने की थी विवादित टिप्पणी

अभिनेता-निर्देशक आर. पार्थिवन ने भी एक कार्यक्रम के दौरान तृषा को लेकर एक विवादित बयान दिया था। आर. पार्थिवन ने मार्च 2026 में एक पुरस्कार समारोह के दौरान तृषा कृष्णन के 'पोन्नियिन सेल्वन' के किरदार 'कुंडावई' का संदर्भ देते हुए कहा था कि तृषा को कुछ समय के लिए घर पर बैठना चाहिए और बाहर नहीं आना चाहिए, क्योंकि इससे समस्याएं पैदा हो रही हैं। पार्थिवन की इस टिप्पणी पर तृषा ने आपत्ति जताई थी। बाद में पार्थिवन ने सार्वजनिक रूप से माफी मांगी थी। यह बयान विजय के साथ तृषा के एक सार्वजनिक कार्यक्रम में एक साथ नजर आने और उससे जुड़ी चर्चाओं के बीच आया था।

संदीपा धर ने शेयर किया वर्कआउट की झलक

मुंबई फिटनेस के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए मशहूर अभिनेत्री संदीपा धर ने हाल ही में अपने फैंस को लेग-डे वर्कआउट की तैयारी की एक झलक दिखाई है। अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किया है, जिसमें उन्होंने अपने लेग-डे से पहले अपनाई जाने वाली एक प्रभावी वॉर्म-अप टेक्निक दिखाई है, जो उनके वर्कआउट रूटीन का अहम हिस्सा है। गौरतलब है कि लेग-डे वर्कआउट में ताकत, लचीलापन और सहनशक्ति की जरूरत होती है। ऐसे में सही वॉर्म-अप मसल्स को एक्टिव करने और शरीर को कठिन एक्सरसाइज के लिए तैयार करने में मदद करता है। संदीपा का यह फिटनेस-फर्स्ट अप्रोच उनकी अनुशासित और नियमित लाइफस्टाइल को दर्शाता है।

वर्कफ्रंट की बात करें तो संदीपा धर जल्द ही नेटफ्लिक्स की ओरिजिनल सीरीज़ 'चुंबक' में नजर आनेवाली हैं। इस एंसेम्बल कॉमेडी सीरीज़ में उनके साथ नीना गुप्ता, अर्जुन बिजलानी, सुमीत व्यास, हेली शाह और कई अन्य कलाकार दिखाई देंगे।मुंबई के बैकग्राउंड पर आधारित यह सीरीज़ 28 अगस्त 2026 को नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होगी। एक ओर जहां संदीपा अपने नए प्रोजेक्ट को लेकर उत्साहित हैं, वहीं दूसरी ओर वह अपनी फिटनेस और वेलनेस को भी उतनी ही प्राथमिकता दे रही हैं। उनका यह संतुलन उनके प्रोफेशनल और पर्सनल लाइफ दोनों के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

डीपफेक बनाने वालों पर होगी कानूनी कार्रवाई

अभिनेत्री मृणाल ठाकुर ने सोशल मीडिया के जरिए डीपफेक बनाने वालों को चेतावनी दी। उन्होंने अपने पोस्ट के जरिए उनके वीडियो और तस्वीरों को हटाने की चेतावनी दी। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर एक नोट शेयर किया, जिसमें उन्होंने डीपफेक बनाने वालों को चेतावनी देते हुए उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाही की बात की। अभिनेत्री ने लिखा, मेरी तस्वीर या आवाज का इस्तेमाल करके डीपफेक वीडियो या फोटो बनाना और शेयर करना गैरकानूनी और गलत है। इस पोस्ट के जरिए मैं सभी को चेतावनी दे रही हूं, इसे तुरंत बंद कर दें। अगर मेरी पहचान का आगे कोई गलत इस्तेमाल हुआ, तो मैं कानूनी कार्रवाई करूंगी।

अभिनेत्री मृणाल ठाकुर की बात करें, तो अब उनकी झोली में कई फिल्में लगी हुई हैं। अभिनेत्री साल की शुरुआत में रोमांटिक-कॉमेडी फिल्म 'दो दीवाने सहर में' नजर आई थीं। इस फिल्म में उनके साथ अभिनेता सिद्धांत चतुर्वेदी मुख्य भूमिका में थे। यह फिल्म मुंबई शहर में रहने वाले दो ऐसे लोगों की है जो आत्म-संदेह, सामाजिक दबाव और असुरक्षा से जूझते हुए प्यार और अपनापन पाते हैं। फिल्म ने बॉक्सऑफिस पर अच्छी कमाई की थी।

इसके बाद अभिनेत्री डेविड धवन की रोमांटिक कॉमेडी फिल्म 'है जवानी तो इश्क होना है' में नजर आई थीं। इस फिल्म में उनके साथ वरुण धवन और पूजा हेगड़े भी मुख्य भूमिकाओं में थे। अभिनेत्री अदिवी शेष के साथ एक्शन-ड्रामा फिल्म 'डकैत- एक प्रेम कथा' में नजर आई थी।

इस फिल्म का निर्देशन शनेल देव ने किया है। यह फिल्म प्यार, धोखे, और बदले की एक अनोखी कहानी है। इसमें हाई-स्टेक्स चोरी और जबरदस्त सस्पेंस देखने को मिलता है। फिल्म में मृणाल ठाकुर ने 'सरस्वती' नाम का किरदार निभाया है। उनका किरदार सिर्फ एक रोमांटिक लव-इंटरेस्ट तक सीमित नहीं है, बल्कि वह कहानी का मुख्य संघर्ष और ताकत का प्रतीक बनता है। आदिवी शेष मुख्य अभिनेता के रूप में नजर आए हैं, जबकि फिल्म में अनुराग कश्यप ने एक खतरनाक खलनायक/पुलिस अधिकारी की भूमिका निभाई है।

राजेश खन्ना व किशोर कुमार की ऐसी जोड़ी बनी कि रिकॉर्ड बना दिया

हिंदी सिनेमा में कुछ जोड़ियां ऐसी बनीं, जिन्हें लोग सिर्फ फिल्मों या गानों से नहीं, बल्कि एक खास एहसास के रूप में याद करते हैं। ऐसी ही एक जोड़ी थी, अभिनेता राजेश खन्ना और गायक किशोर कुमार की। पर्दे पर राजेश खन्ना की मुस्कान और किशोर कुमार की आवाज ने मिलकर ऐसा जादू चलाया कि कई गाने आज भी लोगों की जुबान पर हैं। इस मशहूर जोड़ी के पीछे एक दिलचस्प कहानी भी है। कहा जाता है कि किशोर कुमार किसी भी कलाकार के लिए गाना गाने से पहले उसे समझना चाहते थे और इसी वजह से उन्होंने राजेश खन्ना से मुलाकात कर उन्हें परखा था। यही रिश्ता बाद में हिंदी सिनेमा की सबसे सफल आवाज-अभिनेता जोड़ियों में शामिल हो गया। किशोर कुमार का जन्म 4 अगस्त 1929 को मध्य प्रदेश के खंडवा में हुआ था। उनका असली नाम आभास कुमार गांगुली था। उनके पिता कुंजलाल गांगुली वकील थे और परिवार का फिल्मी दुनिया से जुड़ाव उनके बड़े भाई अशोक कुमार के कारण हुआ। अशोक कुमार हिंदी सिनेमा के बड़े अभिनेता बन चुके थे, जिसके बाद किशोर कुमार भी मुंबई पहुंचे।

शुरुआत में किशोर कुमार का सपना बड़ा गायक बनने का नहीं था। उन्होंने फिल्मों में अभिनय भी किया, लेकिन धीरे-धीरे उन्हें एहसास हुआ कि संगीत ही उनकी असली पहचान है। शुरुआती दौर में वह महान गायक केएल सहगल से प्रभावित थे और उनकी तरह गाने की कोशिश करते थे, लेकिन बाद में उन्होंने अलग शैली बनाई। उनकी आवाज में मस्ती, दर्द और अलग अंदाज था, जिसने बाकी गायकों से अलग पहचान दिलाई।

किशोर कुमार के करियर में साल 1969 की फिल्म 'आराधना' एक बड़ा मोड़ लेकर आई। इस फिल्म के संगीत पर काम चल रहा था। संगीतकार एसडी बर्मन और निर्देशक शक्ति सामंत चाहते थे कि राजेश खन्ना के लिए किशोर कुमार आवाज दें। उस समय राजेश खन्ना नए कलाकार थे और किशोर कुमार किसी नए अभिनेता के लिए बिना उसे जाने गाना नहीं चाहते थे।

कहा जाता है कि किशोर कुमार ने साफ कहा कि वह पहले राजेश खन्ना से मिलना चाहते हैं। इसके बाद राजेश खन्ना को किशोर कुमार के घर भेजा गया। दोनों की मुलाकात हुई और किशोर कुमार ने उनसे बातचीत की। राजेश खन्ना के जवाब और उनके व्यक्तित्व से किशोर कुमार प्रभावित हुए। इसके बाद उन्होंने उनके लिए गाने की हामी भर दी।

फिल्म 'आराधना' के गाने 'मेरे सपनों की रानी' और 'रूप तेरा मस्ताना' जब रिलीज हुए तो पूरे देश में छा गए। इन गानों ने न सिर्फ किशोर कुमार को नई ऊंचाई दी, बल्कि राजेश खन्ना को भी सुपरस्टार बनाने में बड़ी भूमिका निभाई। इसके बाद दोनों की जोड़ी लगातार सफल होती गई।

राजेश खन्ना और किशोर कुमार की साझेदारी इतनी मजबूत हुई कि किशोर कुमार ने राजेश खन्ना पर फिल्माए गए करीब 245 गाने गाए। दोनों ने लगभग 92 फिल्मों में साथ काम किया। यह रिकॉर्ड हिंदी सिनेमा की सबसे यादगार गायक-अभिनेता जोड़ियों में गिना जाता है। राजेश खन्ना की रोमांटिक छवि और किशोर कुमार की आवाज ने मिलकर 'अमर प्रेम', 'कटी पतंग' और 'हाथी मेरे साथी' जैसी फिल्मों के गानों को अमर बना दिया।

किशोर कुमार ने अपने करियर में कई बड़े संगीतकारों के साथ काम किया। आरडी बर्मन, एसडी बर्मन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल और कई अन्य संगीतकारों के साथ उनकी जोड़ी खूब पसंद की गई। उन्होंने हिंदी के अलावा बंगाली, मराठी और कई दूसरी भाषाओं में भी गाने गाए। उनकी उपलब्धियों की बात करें तो किशोर कुमार ने आठ बार फिल्मफेयर अवॉर्ड जीता। 13 अक्टूबर 1987 को दिल का दौरा पड़ने से किशोर कुमार का निधन हो गया।।

Printed and Published by **GANTYADA APPARAO** on behalf of **GANTYADA APPARAO**, Printed at Sri Sai Ganga Printers and Publishers Flat No: 504, Bharat Towers, 5th Lane, Dwaraka Nagar, Visakhaptanam, Andhra Pradesh-530016, and Published at H.NO: 38-4-216, MAHARANI STREET, MARRIPALEM, Visakhapatnam, Andhra Pradesh-530018, **Editor: GANTYADA APPARAO.** Mobile : 9059465965, **RNI : APHIN/26/A3657**, editorpenpower@gmail.com